'अग्निध्वजा' काव्यसंग्रह में मानवीय संवेदना

डॉ. गायत्रीदेवी जे. लालवानी
सम्प्रति–अध्यापक सहायक, हिन्दी विभाग
श्री कृष्ण प्रणामी आर्ट्स कालेज,दाहोद
गुजरात।
MO.7984498390
ईमेल:-gsvttrust@gmail.com

प्रकृति के सुकुमार कवि पंत जी लिखते हैं–
"वियोगी होगा पहला कवि
आह से उपजा होगा गान
उमड़कर आँखों से चुपचाप
वही होगी कविता अन्जान"

हृदय की पुकार ही कविता है। मन में उठने गिरने वाली अनगिनत धाराएँ ही कविता का विशाल सागर बन जाती है। वेदना जब कवि हृदय से छलकने लगती है तब वह कविता का आकार ग्रहण करती है। वर्तमान में दलित, शोषित, उपेक्षितों का जीवन संदर्भ, उनकी समस्याएं कविता के केन्द्रबिन्दु हैं। वर्तमान कविता ने अपनी एक विकास यात्रा तय की है जिसमें वैचारिकता, जीवन-संघर्ष, आक्रोश, नकार, सांस्कृतिक छद्म, वर्ण संघर्ष, साहित्यिक छलावा, जातिगत प्रताड़ना, गैरबराबरी आदि विषय बार-बार समाज के समक्ष आते है। पिछड़े वर्गो से आए कवियों ने यथार्थ को अपनी कविता का विषय बनाया है। उसमें कल्पना का स्थान नहीं है। वे अपनी कविताओं के माध्यम से अपने यथार्थ अनुभवों को ही प्रकट करते हैं।

हिन्दी के 'महात्मा ज्योतिबा फूले शिक्षाविद्', 'काव्यकिरीट', 'अनुराग साहित्य सम्मान', 'डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन अनुवाद पुरस्कार' आदि पुरस्कारों से सम्मानित सुप्रसिद्ध कवि डॉ. युवराज सोनटक्के जी दलितों, शोषितों, पीडितों, उपेक्षितों के जीवन में एक नयी सुबह का आहवान् इस काव्यसंग्रह के माध्यम से करते है। उनके इस काव्यसंग्रह में चालीस सचित्र कविताएं संग्रहित है। जिसमें मातृशक्ति, पितृशक्ति के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने वाली कविताएं, महात्मा बुद्ध, समाज सुधारक ज्योतिबा फूले, बाबा साहब अम्बेडकर आदि के उपकारों को कविताओं के माध्यम से शब्दबद्ध किया है। साथ ही कवि दलित समाज, शोषितों की दारूण स्थिति, उनके दलन, दुःख-दर्द, पीड़ा को व्याख्यायित करते हुए, समाज के चक्रव्यूह को काटकर शोषितों, पीडितों को अग्निध्वजा लेकर पुरानी संस्कारगत रूढ़ियों का दहन कर स्वाभिमान से जीने की सीख देते है। कविश्री सोनटक्के जी शांति की वसुधा बनाने के लिए कविताओं द्वारा पाठकवर्ग के मनों को अग्नि ज्वाला से भर देते हैं। ताकि शोषित, पीड़ीत और समाज द्वारा हाशिए पर कर दिए गए लोगों के मनों में सामाजिक रूढ़ियों से मुक्ति के लिए ऐसी ज्वाला प्रज्वलित हो जिससे वे समाज के अन्याय, दुराचारों, शोषणों को खत्म कर एक नये समाज की पृष्ठभूमि की संरचना कर सके। डॉ. सरगु कृष्णमूर्ति सरयूराम जी 'अग्निध्वजा' काव्यसंग्रह के विषय में पुस्तक के फ्लैप में लिखते है- "अग्निध्वजा उनके हृदय रूपी धरातल से

समुत्पन्न क्रान्ति, आवेश, आक्रोश, पौरूष, समता भावना आदि स्फुलिंगों से समंचित प्रगतिवादी चेतना की पावक पताका है, जिसकी ज्वालाओं से कवि समाज के शोषकों को जला देना चाहते है और जिसकी आँच से कवि शोषण के कारण ठंडे पड़े हुए दीन-दलितों को पुनः ज्वाला-पुरूष बनाना चाहते है। इस संग्रह की कविताओं में मानवता के महान उद्धारक सिद्धार्थ बुद्ध, ज्योतिबा फूले, डॉ. अम्बेडकर आदि की महत्ता का वे गायन करते हैं। माता-पिता के प्रेम-पीय पीयूष को कविता के कलशों में आपूरित करते हैं। साथ ही व दुख, दर्द, दरिद्रता और शोषण की दारूण शिलाओं के नीचे दब कर आहें भरते हुए दीन-दलितों के हृदय में क्रांति की ज्वालाएँ भरते हैं। कवि क्रांति रूपी मेघों से शांति की सुधा बहाना चाहते हैं।" 1

सदियों से ही दलितों, शोषितों, पीडितों की स्थिति दयनीय रही है। उनके लिए सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक स्थितियाँ प्रतिकूल ही रही हैं। उन्हें समाज में दबाकर रखा गया अन्य सभी वर्णो ने उन पर अपना अधिपत्य समझा जब चाहे उसे प्रताड़ित किया, जब चाहे उसका शोषण किया, जब मन आए स्वार्थवश उनसे काम करवा लिए गए और उन्हीं के किए गए कार्यो द्वारा स्वंय को साधन सम्पन्न किया और शोषित वर्ग, दलित वर्ग को घृणित मान लिया गया। उन्हें मंदिरों के निर्माण का तो कार्य सौंपा गया पर मंदिर बनते ही उसमें जाने का हक उनसे छीन लिया गया, उनसे कुएं की खुदाई का कार्य तो कराया गया पर उसके पानी से उन्हें वंचित कर दिया गया। जब चाहे जैसे उनका उपयोग किया और उपयोग खत्म हो जाने पर दूर फेंक दिया गया। इस्तेमाल करो और दूर फेंको। कवि ने उन सभी समस्याओं को अनुभव किया। वे 'गूँगी हस्ती' कविता के माध्मम से बताते हैं-

"विषमता के जुल्म की चक्की में
संदलित किया गया दलितों का जीवन
उन्होंने पिरोई हुई घुमावदार रस्सी से
खूँटे पर टाँग कर रखा
तब से-
मेरे लहू से भींगे हुए उग्र घाव
आपस में क्रांति की भाषा बोलने लगे"2

कवि ने हृदय दर्द, हृदय की वेदना, पीड़ा, अश्रुवीणा को अपनी कविताओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है। 'निसर्ग' कविता में दलितों की स्थिति को प्रस्तुत करते हुए कविवर सोनटक्के जी लिखते हैं-

"हमारे हृदयों के चिथड़े फाड़कर कठपुतलियाँ बनाई
उनके रंजन के लिये
झुग्गियों के दीपक बुझा कर अंधेरा फैलाया
उनकी इच्छा पूर्ति के लिये
हे निसर्ग। तू कातिल हुआ
आर्त चीखें हमारी ज़मीदोज़ कर
कबूल है कि प्रेत जैसा जीवन बिताने के लिये तूने
चार दीवारें साकर कीं
माया के मायावी पखाल-में
हमारे लिए तू अणुबाँम्ब हुआ

हज़ारों शोषितों के रक्त से सने क्रन्दन ने
तेरे बधिर कानों को छुआ नहीं
परंतु मस्तिष्क पर बालू की परत बनाकर तू चुप रहा
या हमें ध्वस्त करते हुए
जमे हुए बर्फ के समान स्तब्ध रहा
गाँव के बाहर स्थित शापित घरों को नज़र अंदाज कर
विषैली हँसी के साथ खुशी मानता रहा
और उमड़ उठने वाले उजाले को यहाँ
पग भर भी जगह नहीं दी
फिर भी पीठ पर अपनी लाश लेकर
जिन्दा रहे हम अंधेरे में" 3

शोषितों की दयनीय स्थिति को जानते हुये भी समाज सोता रहा अपने स्पप्नों को संजोता रहा। दलितों को अंधकार के अज्ञान से सज्जकर, उजालों के ज्ञान पर स्वंय को श्रेष्ठ समझता रहा। करोड़ों शोषितों, पीडितों की पुकार तेरे कानो को छू भी न सकी, तूने कभी उन्हें आगाज़ का अवसर ही नहीं दिया। पीडितों के उबलते रक्त का कोई जायजा भी नहीं लेने आया। रक्त उबलकर स्वंय ही अपने अस्तित्व से दूर हो गया और कातिल समाज को इतना भी ज्ञान नहीं हुआ कि, मानवता की वसुंधरा को, अमन - चैन की धरती को कब मानव ही मानव का रक्त बहाकर क्षीण करता रहा। कवि अपने आक्रोश को प्रकट करते हुए 'आक्रोश' कविता में अपने भाव व्यक्त करते हैं-

"शोषित पर हुए क्रूर क्रौर्य के लबादों को उधेड़ते हुए
मेरे रक्त की बूँदों का समूह आक्रांत करता रहा
वक्षस्थल पर इस भूमि के प्रबंधन करते हुए
दहाड़ा कल का प्रतिद्रोही क्षितिज
भूख से व्याकुल पशु जैसा
और उजाला भी थरथराया सहम कर
अंधेरे को घायल करते हुए
तब मेरे रक्त की बूँदों का समूह आक्रोश करता रहा।"4

कवि बताते हैं कि जन्म से ही पीडितों, शोषितों, दलितों के माथे पर गरीबी का तिलक लगाया गया। बचपन से ही वे दुख-दर्द, पीड़ा से खेलते रहें हैं। उनकी आंखों से अश्रुओं की बरसात जन्म से शुरू हो जाती है लेकिन यह बरसात मात्र वषाअँतु तक ही नहीं रहती यह तो बारहमास ही दलितों के जीवन को भिगोती रहती है। 'क्रांति घन' काव्य में कवि का आहत स्वर देखिये-

"माँ की कोख से उतरा तब से
दावेदार जैसी मेरी आँखों की वर्षा ऋतु बन कर
बरसात हो रही है
जिंदगी की दहलीज पर रखा मेरा कदम
नेत्रहीन साबित हुआ है
कितनी बार मैं गिरा लेकिन गिर कर पड़ा नहीं रहा
उस क़दम के लिए प्रत्येक पथ अगुआ हुआ है

मेरी आँखों से निकली प्रकाश-किरण
यहाँ के तप्त अंधेरे को छेदने लगी है
और प्रकाश-किरण की बरसात से
अंधेरा घायल होकर तड़प रहा है"5

नारी की दशा दिशाहीन सी रही है। किसी भी समाज की नारी का शोषण करते हुए वासनाग्रसित पुरूष नारी के देवी रूप को भूलकर उसकी देह को, उसकी अस्मिता को छलनी कर देता है। दलित स्त्रियों की दशा तो दलित पुरूषों से भी दयनीय है। वे दोहरी पीड़ा से गुजरती हैं। शोषणकर्ता शोषण करते हुए कभी थकते नहीं। अबलाओं की आबरू का रोज सौदा होता रहा है। गरीबी के यौवन का शोषण होता रहा है। कवि आगे लिखते हैं-

"जुल्मखोरों द्वारा ध्वस्त हज़ारों
ग़रीबों के यौवन की रंगोलियों
और कितनी ही अबलाओं के शरीरों पर अंकित
वासनाओं की रखाओं को देखकर
जलते हुए मेरे मन में
दुख की बरसात की धाराएं चहल-क़दमी कर रही हैं
और ह्रदय से सिसकियों की वर्षा हो रही है"6

इसी संदर्भ में 'अकाल दुःख' कविता में भी नारी वेदना का वर्णन करते हैं। नारी देह वासना में पुरूष बाजों की तरह मस्त हो नारी देह से खिलवाड़ करते हैं जिसकी वेदना देखिये–

"आँखो के सामने चिल्लाती भूख शांत
करने के प्रयास में वह अबला विकल–व्याकुल
चक्रवातीय वासना की वर्षा से
उसे भिगोनेवाला मस्त बाज
मसली हुई देह के बालू पर अनवधान से रहे शेष चिह्न
जतन करती वह स्मृति की भेंट समझ कर
अनेक प्रश्नों के पत्थर आघात करते
उसके मन की मरूभूमि पर"7

कवि इन जुल्मखोरों के जुल्म को खत्म कर देना चाहते है उसे जड़ से उखाड़ना चाहते है। वे वर्षा से अनुरोध करते हैं कि, हे वर्षा तू सदियों से पीड़ीत इन लोगों को इस जलती जग की धूप से मुक्त करने हेतु बरस। वे 'मनोनुकूल वर्षा' काव्य में लिखते हैं–

"तू अनुभव करेगी यहाँ
सदियों से धूप की किरणें पीकर
तप्त हुए लोगों की रेतीली जिंदगियाँ
विषमता की वनाग्नि पर टँगे हुए निराश्रित झुर्रियाँ पड़े शरीर
तेरे मस्तिष्क में क्रोध की बिजलियाँ कौंधेंगी देखकर

यहाँ रेगिस्तान में अस्तव्यस्त फैली हुई आबरू की लावारिस हडिड्याँ
और मनुवंश से बहाल किया हुआ
फौलादी बेड़ियों का अपंगत्व
युगानुयुगे आक्रोश करती रहेगी तू शोषितों के लिए
और खुशहाल होगी
यहाँ के जुल्मखोरों को बहाती हुई बाढ़ में
आकाश का ह्रदय चीरकर विद्रोही पवन के संग
टूटे हुए शरीर से टपकने वाले आयुष्य के
फलने–फूलने के लिए बरस
वर्षा, रक्तिम ज़ख्मों को धोने के लिए मनोनुकूल बरस।"8

वे समाज में एकत्व जगाकर इन सभी समस्याओं से समाज को मुक्त करना चाहते है। साथ ही देश के हर पीड़ीत, प्रताड़ित को न्याय दिलाना चाहते है, वे समाज में परिवर्तन चाहते है। इसीलिए सबके साथ मिलकर विद्रोह करने हेतु आगाज़ करते हैं–

"तेरी मस्ती को न सहते हुए
अंधेरे तूफान में प्रकाश–अपवर्तन करेंगे
प्रत्येक जीव के रोम–रोम में
विद्रोह का तप्त रस प्रवाहित करेंगे
उपेक्षितों के मुखों से प्रस्थापित लगाम निकालकर
प्रत्येक मुँह में अग्निजिह्वा बोयेंगे।"9

वे 'उबलता क्रोध' कविता में भी लिखते हैं–

"इन दिशाओं के
बरसते अंधेरे का तटबंध पार करता हुआ
थकित आवेश झरने लगा बेजान पंखों से
ह्रदय के जख्मों की उग्र रेखाएँ थर्राइ पलभर
मन के अंतराल में उबलता क्रोध।"10

शोषित समाज अपने आत्मविश्वास के साथ विद्रोह करके ही आगे आया है। स्वयं को वनाग्नि में जलाकर ही वे निखरे है। सोनटक्के जी लिखते हैं–

"मेरे शब्दों ने आँखे खोलीं तब से
उनके उनके पापों पर फूल पिरोती–पिरोती
वर्षा हो रही है
जिंदगी के संघर्ष में क़दम रखा तब से
मुझे टालती–टालती वर्षा हो रही है।"11

वे 'तूफान होकर' कविता के माध्यम से चेतनता प्रदान करते हुए भयभीत न होते हुए आगे बढ़ने की माँग करते हैं वे लिखते हैं–

"बादल छाये .....अंधेरा हुआ, डरना नहीं
घने बालों का संभार अभी खोलना नहीं
बर्फीली शिराओं का उग्र झोंका संभाल ले
किन्तु ध्यान रखना
ठंडा उदास होता नहीं ऐसा अंतरंग का अंगार"12

आज भी शोषितों, पीडितों, उपेक्षितों, दलितों के प्रति अन्य समाज के भाव घृणित रहे है, उनकी मानसिकता नहीं बदलती। जिसकारण आज भी हाशिए पर कर दिए गए समाज के बड़े हिस्से को शोषण का शिकार होन होना पड़ता है। शिकंजे से मुक्ति उन्हें मिलती ही नहीं। शोषित, पीड़ीत, उपेक्षित, दलित समय के महानुभावों महात्मा बुद्ध, युगप्रवर्तक समाज सुधारक ज्योतिबा फूले, युगनिर्माता बाबासाहब अम्बेडकर आदि के जीवन से प्रेरणा लेकर ही अपने जीवन को सवार पाये है। कवि समाज को इन महानुभावों से मानवता की राह में किस तरह चलना है? किस तरह वनाग्नि बनकर बरसना है? सीख लेकर आगे बढ़ने का आदेश देता है। 'अग्निध्वजा' कविता में कवि की वाणी इसी संदर्भ में मुखर होती हैं–

"हाथों में अग्निध्वजा
और आँखों में शोषितों के
आँसू लेकर
गर्भस्थ गगन से
बाहर आ संभलकर
ज्योतिबा फूले के फूत्कार से
और आंबेडकर के आवेश से
मूसलधार बरस"13

दलित, शोषित, पीड़ीत अपने अस्तित्व की खोज में, अपनी पहचान की खोज में दर–बदर भटकते हैं। सवैंधानिक संरक्षण के बाद भी देश में समाज में समानता के भाव नहीं जाग पाते, तो अब उपेक्षितों को उनकी अस्मिता से जीने का संरक्षण मिल पायेगा क्या? क्या वह अपनी समाज में पहचान ढूंढ पायेंगे? कवि सोनटक्के जी अपनी 'अस्तित्व का आशय' कविता में यह प्रश्न उठाते हैं–

"विद्रोह के अग्निरस में हुए विलिन
ये परम्परागत निर्दयता के नक्षत्र
चिता की आग लिप्त संसार की मुक्ति हेतु
करने होंगे तेजोमय अब धारदार शस्त्र
मिट्टी के गर्भ से गरजने वाली लताओं को
मिलेगा क्या अब सीढ़ी का आधार?
गरीबों के आकाश में जगमगाते तारों को
मिलेगा क्या उदात्तता का नया स्वीकार"14

क्या शोषितों की आनेवाली पीढ़ीयाँ सुख के सूरज के दर्शन कर पायेगी? क्या वे स्व अस्तित्व के साथ, समानता की धरा पर अपने पैर रख पायेगी? कवि को समाज में शोषण का शिकार हुए शोषितों के भविष्य की चिंता सताती है।

कवि सोनटक्के जी कहते हैं यदि आज हमने हमारे भविष्य के लिए लड़ाईयाँ नहीं लड़ी, विद्रोह की अग्नि जन–जन में नहीं जागी तो यह सब संभव नहीं हो पायेगा और यदि इसके विपरित प्रत्येक शोषित अपने अधिकारों के लिए लडेगा तो निश्चित ही उसे अपनी मंजिल मिलेगी। वे अपनी कविता 'अग्निध्वजा' में इस ओर संकेत करते हैं।

"निःसंदेह ही हर्षोन्माद से
प्यासे जलते होंठों का चुंबन देकर
यह धरती लजाती शरमाती
अपना तृषित यौवन
तुझे समर्पित करेगी।"15

इस प्रकार कवि सोनटक्केजी ने अपने काव्य के माध्यम से दलितों, शोषितों, उपेक्षितों की वाणी को मुखर करते हुए उनके उज्जवल भविष्य के लिए स्वयं विद्रोह करने हेतु चेतना प्रदान की है। क्रांति की ज्वाला प्रज्वलित कर करते हुए वे सभी शोषितों को आगे बढ़ने के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं। इसप्रकार उनकी कविताएं मानवहितों के लिए शस्त्र उठाकर, मानवता स्थापित करने हेतु, एकता–समानता की माँग करती हुई इस धरा को स्वर्गमय बनाने के लिए तत्पर हैं।

संदर्भः–

1 अग्निध्वजा–युवराज सोनटक्के, पुस्तक फ्लैप से
2 अग्निध्वजा काव्यसंग्रह–युवराज सोनटक्के–गूंगी हस्ती,पृ–36
3 वही–निसर्ग,पृ–56
4 वही–आक्रोश,पृ–41–42
5 वही–क्रांति घन,पृ–58–59
6 वही–पृ–59
7 वही–अकाल दुख,पृ–48–49
8 वही–मनोनुकूल वर्षा,पृ–65
9 वही–निसर्ग,पृ–57
10 वही–उबलता क्रोध,पृ–52–53
11 वही–क्रांति घन,पृ–59
12 वही–तूफान होकर,पृ–67
13 वही–अग्निध्वजा,पृ–62–63
14 वही–अस्तित्व का आशय,पृ–71
15 वही–अग्निध्वजा,पृ–63